प्रश्न→ 'किरातार्जुनीयम्' के आधार पर (प्रथमसर्ग) प्रश्न-1

(क) वनेचर द्वारा प्रतिपादित दुर्योधन की शासनव्यवस्था और नीति का वर्णन करें?

(ख) द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर को प्रेरित करने के लिए दिए गए नीतियुक्त उपदेश का वर्णन करें?

उत्तर- भारवि की एकल प्रस्तुत रचना 'किरातार्जुनीयम्' है। इस महाकाव्य में 18 सर्ग हैं। इसमें भारवि विचित्रमार्ग (कलावाद) का अनुसरण करते हैं। 'किरातार्जुनीय'- किरातः (किरात अर्थात् वनवासी के वस्त्र को धारण करनेवाले शिव) च अर्जुनश्च = किरातार्जुनौ (द्वन्द्वसमास)। तावधिकृत्य कृतं काव्यं किरातार्जुनीयम् ('द्वन्द्वाच्छः' सूत्र से छ अर्थात् ईयप्रत्यय)।

वन में निवास की अवधि में अर्जुन द्वारा कौरवों पर जीत के लिए हिमालयपहाड़ पर तप करने, वनवासी के रूप में आए शिव से संघर्ष करने तथा संतुष्ट हुए शिव से पाशुपत अस्त्र की उपलब्धि की मुख्य कथा इस महाकाव्य में वर्णित है।

प्रथम सर्ग में द्वैतवन में (क) वनेचर (गुप्तचर) द्वारा युधिष्ठिर को दुर्योधन की नीति और शासनव्यवस्था का निरूपण तथा (ख) द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर को प्रेरित करने के लिए दिए गए नीतियुक्त उपदेश का वर्णन होता है।

(क) प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर के प्रति वनेचर दुर्योधन की शासनव्यवस्था के संदर्भ में तथ्यों को अभिव्यक्त करते हैं। दुर्योधन जुए के छल से प्राप्त राज्य को नीति के साथ समन्वयपूर्वक संचालित करते हैं। इस कार्य में वह साम, दान, दण्ड तथा भेद की नीति का व्यवहार करते हैं। वह पुत्र तथा रिपु (शत्रु) सबके साथ एकसमान व्यवहार का संचालन करते हैं। उन्होंने सिंचाई की व्यवस्था में अपूर्वसुधार किया है; परिणामस्वरूप किसान (कृषक) विपुलमात्रा में अन्न उत्पादन करने में सफल हो रहे हैं। उनके क्रियाकलापों तथा शासनव्यवस्था से जनता प्रसन्न है तथा उनके प्रति अनुरक्त है। वह व्यवहार में कोप को अभिव्यक्त नहीं करते। सकल राजा उनका अनुगमन करते हैं। उनके सैनिक कर्तव्यपथ में प्राणों के उत्सर्ग से पीछे नहीं हटते। उसने अनुज दुःशासन को युवराज के पद पर नियुक्त करके शासन का विकेंद्रीकरण किया है। वह धर्म को धारण कर राजा के कर्तव्यों का निर्वाहण करते हैं। वह जीवन की हर विधा में प्रगतिपथ पर अग्रसर हैं। वह राजकाज में आनेवाले प्रत्येक संकट का सामना करने के लिए तत्पर रहते हैं।

Scanned by CamScanner

वनेचर राजा युधिष्ठिर को दुर्योधन की कूटनीति का सम्यक् तथा तात्त्विक समाधान श्लोकों को कहते हैं। अन्ततः युधिष्ठिर से पारितोषिक प्राप्त कर वनेचर अपने गृह की ओर प्रस्थान करते हैं।

वनेचर द्वारा अभिव्यक्त प्रमुख कथनों का निरूपण

महाकवि भारवि ने वनेचर की वाणी में अनुपम गुणों की अभिव्यक्ति की है जो इसप्रकार से है–(1) मधुर शब्दों से अलंकृत, (2) अर्थ की गम्भीरता से युक्त तथा (3) प्रामाणिक शब्दों से समन्वित (सम्बद्ध)।

(क) "स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे॥" (1/3)(किरात०)

वनेचर जो गुप्तचर का कार्य करते हैं, राजा युधिष्ठिर को कहते हैं– हितकर तथा मनोहर वचन दुर्लभ होते हैं। अतः मेरे द्वारा प्रिय या अप्रिय कथन के अभिव्यक्त होने पर मुझे क्षमादान दिया जाय।

(ख) "अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥" (1/4) (किराता०)

राजाओं तथा मन्त्रियों का परस्पर व्यवहार अनुकूल होने पर राज्य प्रगतिपथ पर अग्रसर होता है। जो मन्त्री, राजा को सम्यक् मंत्रणा नहीं देता वह मित्र के नाम पर कलंक है। जो राजा अपने कर्तव्यनिष्ठ मन्त्रियों के उपदेश को अनसुना करता है वह भी राजा होने की परिधि से बाहर है।

(ग) "स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं हिताम्न यः संशृणुते स किंप्रभुः।
सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥" (1/5) (किराता०)

दुर्योधन महापुरुषों के साथ विरोध, दुष्टों के साथ से श्रेष्ठ मानता है और इसप्रकार पाण्डवों के साथ वैरभाव में संलग्न रहता है।

(घ) "तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।
समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद् वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः॥" (1/8) (किराता०)

सन्दर्भग्रन्थ-(1) संस्कृतसाहित्यकाइतिहास (पृष्ठ० 243-251)-डा० उमाशंकरशर्मा 'ऋषि'
(2) किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) –डा० सावित्रीगुप्ता (विद्यानिधिप्रकाशन, दिल्ली)

Scanned by CamScanner

(ख) द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर को प्रदान किया गया नीतिसम्मत आदेश।

द्रौपदी युधिष्ठिर को प्रेरित करने के लिए कहती हैं-
दुष्टजनों के साथ अभद्रता (दुष्टता/शत्रुता) का व्यवहार नहीं करनेवाले लोग जीवन के रणसंग्राम में पतन की ओर अग्रसर होते हैं। जिसप्रकार तीक्ष्णबाण कवच को धारण न करनेवाले लोगों को नष्ट करदेते हैं उसीप्रकार शठ अथवा दुराचारी लोग सरलजनों के हृदय की बात को जानकर उन्हें समाप्त (नष्ट) कर देते हैं।

(क)

"व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधा-नसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥"

(किराता०)(1/30)

(=क्रोध)कोपरहित मानव के साथ अनुराग होनेपर भी लोग उनका आदर नहीं करते। वैरभाव से युक्त शठलोग भी क्रोधरहित मानव से भयभीत नहीं होते। जिसमनुष्य के स्वभाव में नियंत्रित क्रोध है उसके अंतर्गत सकलजन अधीन होजाते हैं।

(ख) "अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः॥"

(किराता०)(1/33)

द्रौपदी राजायुधिष्ठिर से उनके प्रत्येक भ्राता की दुर्गति का निरूपण करती हैं। साथ ही अपने साथ हुए अपमान का प्रतिकार करने के लिए युधिष्ठिर को प्रेरित करती हैं।

विपुलरथ से गमन करनेवाले तथा लालचंदन का लेप लगाने का अभ्यासी भीम पर्वतों पर चरणरूपी रथ से गमन करते हैं। अर्जुन वल्कल वस्त्रों को धारण करते हैं। वन की धरती पर शयन करने से नकुल तथा सहदेव का शरीर कठोर होगया है। नकुल और सहदेव की इस दशा को देखकर (युधिष्ठिर) आप धैर्य तथा संयम को क्यों नहीं परित्यक्त करते हैं?

"वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ।
कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्"

(किराता० 1/36)

Scanned by CamScanner

द्रौपदी राजा युधिष्ठिर से शान्ति का परित्याग। कर क्षत्रियआलोक को धारण कर दुर्योधन का अंत करने को प्रेरित करती है।

आप्तकाम (जिन्होंने अपनी इच्छाओं को जीत लिया है) मुनि निःशब्दता द्वारा षड्रिपुओं तथा नकारात्मक शक्तियों पर विजय पाकर संसिद्धि प्राप्त कर लेते हैं।

किन्तु राजा नीरवता (शांति) द्वारा शत्रुओं पर यथा- दूसरे राजाओं पर विजय अथवा सिद्धि नहीं प्राप्त कर सकते।

" "विहाय शान्तिं नृप धाम तत्पुनः प्रसीद सन्धेहि वधाय विद्विषाम्।
व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः, शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः॥"
(किराता॰ 1/42)

युद्ध में जीत की कामना रखनेवाले राजा शत्रुराजाओं के साथ की गई सन्धि को छलपूर्वक भङ्ग करते हैं। वे सन्धि द्वारा निर्धारित काल की प्रतीक्षा नहीं करते। अतएव आप (युधिष्ठिर) भी समय नष्ट न करें तथा कूटनीति का आश्रय लें। इसप्रकार दुर्योधन से अपने खोए हुए राज्य का पुनः अधिग्रहण करलें।

"न समयपरिरक्षणं क्षमं ते, निकृतिपरेषु परेषु भूरिधाम्नः।
अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशा, विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि॥"
(किराता॰ 1/45)

- अंतमें द्रौपदी युधिष्ठिर के लिए यह कामना करती हैं कि इन्हें पुनः अपना खोया हुआ राज्य प्राप्त हो।

"विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः॥"
(किराता॰ 1/46)

Scanned by CamScanner